प्रातः क्लास 11-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह है बाप और बच्चों का मेला। गुरु और चेले वा गुरु और शिष्यों का मेला नहीं है। उन गुरु लोगों की दृष्टि रहती है यह हमारे शिष्य हैं अथवा फालोअर्स हैं, जिज्ञासु हैं। हलकी दृष्टि हो गई है ना। उस दृष्टि से ही देखेंगे। आत्मा को नहीं। वह देखते हैं शरीर को। और वह (शिष्य) भी देहअभिमानी ही होकर बैठते हैं। उनको अपना गुरु समझते हैं। दृष्टि ही वह रहती है। हमारा गुरु है। गुरु के लिये रिगार्ड रखते हैं। यहां तो बहुत फर्क है। यहां बाप बच्चों का रिगार्ड रखते हैं। जानते हैं इन बच्चों को पढ़ाना है, यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, बेहद की हिस्ट्री जागरफी बच्चों को समझानी है। बच्चे बच्चे ही कहेंगे। उन गुरुओं के दिल में बच्चों का लव नहीं होगा। बाप के पास तो बच्चों का बहुत लव रहता है। और बच्चों का भी बाप पर लव रहता है। यह है प्रवृति मार्ग का लव। वह तो है ही निवृति मार्ग वाले तो उनको लव रह न सके। उनको कहा जाता है भक्ति। तुम जानते हो बाबा तो हमको सृष्टि चक्र का ज्ञान सुनाते हैं। वह क्या सिखलाते हैं आधा कल्प शास्त्र आदि सुनाते, भक्ति की क्रिया कर्म, गायत्री, संध्या आदि2 सिखलाते हैं। यह बाप तो आकर अपना परिचय दे रहे हैं। हम बाप को बिल्कुल ही नहीं जानते थे। सर्वव्यापी ही कह देते थे। कब भी पूछो परमात्मा कहां है? तो झट कहेंगे वह तो सर्वव्यापी है। तेरे में मेरे में भी है तुम्हारे पास जब मनुष्य आते हैं तो पूछते हैं यहां क्या सिखलाया जाता है? बोलो हम राजयोग सिखलाते हैं जिससे तुम मनुष्य से देवता अर्थात राजा बन सकते हो। और कोई सतसंग में ऐसा नहीं होगा जो कहे कि हम मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा देते हैं। देवतायें होते हैं सतयुग में। कलियुग में है मनुष्य। अभी हम तुमको सारी सृष्टिचक्र का राज समझाते हैं। जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। और तुमको पावन बनने की युक्ति भी बहुत अच्छी बताते हैं। ऐसी युक्ति कब कोई समझा न सकेंगे। यह है सहज राजयोग। बाप है पतितपावन। वह सर्वशक्तिवान भी है। तो उनको याद करने से ही पाप भस्म होंगे। क्योंकि योग-अग्नि है ना। तो यहां नई बात सिखलाते हैं। यह ज्ञान मार्ग है। ज्ञान सागर एक ही बाप होता है। ज्ञान और भक्ति अलग2 है। ज्ञान सिखलाने लिये बाप को आना पड़ता है। क्योंकि वही ज्ञान का सागर है। वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं। मैं सभी का बाप हूं। ब्रह्मा द्वारा तुमको सृष्टि चक्र का ज्ञान समझाता हूं। पुकारते आये हो आकर हमको पावन बनाओ। तो मैं आकर सारी सृष्टि को पावन बनाता हूं। पावन दुनिया है सतयुग, पतित दुनिया है कलियुग। तो सतयुग आदि और कलियुग अन्त का यह है संगम युग। इनको लीप युग भी कहा जाता है। इसमें हम जम्प मारते हैं। कहां? पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जम्प मारते हैं। वह तो सीढ़ी से आते2 नीचे उतरते आते हैं। यहां तो हम छी छी दुनिया से नई दुनिया में एकदम जम्प मारते हैं। सीधा चले जाते हैं ऊपर। पुरानी दुनिया को छोड़ हम नई दुनिया में जाते हैं। यह है बेहद की बात। बेहद की पुरानी दुनिया में ढेर मनुष्य हैं। नई दुनिया में तो बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वहां तो सभी पवित्र ही रहते हैं। कलियुग में सभी हैं अपवित्र। अपवित्र रावण बनाते हैं। यह तो सभी को समझाओ। तुम अभी पराई रावण राज्य में हो। असल तुम रामराज्य में थे। जिसको स्वर्ग कहा जाता था। फिर कैसे 84 का चक्र लगाकर नीचे गिरे हो हम बतला सकते हैं। जो अच्छे समझू होंगे वह झट समझेंगे। जिसकी बुधि में नहीं आवेगा तो वह तवाई मिसल इधरउधर देखते रहेंगे। अटेन्शन से सुनेंगे नहीं। कहते हैं तुम तो जैसे तवाई हो। सन्यासी लोग भी जब कथा बैठ सुनाते हैं तो कोठ झूटका खाते हैं, या अटेन्शन और तरफ रहता है तो अचानक उन से पूछते हैं क्या सुनाया? बाप भी सभी को देखते रहते हैं। कोई तवाई तो नहीं बैठे हैं। अच्छे शुद्ध बच्चे जो होते हैं वह पढ़ाई में कब उवासी आदि नहीं देंगे। बहुत हैं जैसे तवाई हो बैठते हैं। स्कूल में कब कोई आंख बन्द कर बैठे यह तो कायदा नहीं। कुछ भी ज्ञान को समझते नहीं हैं। बाप को याद करना बड़ा मुश्किल है उन्हों के लिये। फिर पाप कैसे कटे। तेज बुधि वाले तो अच्छी रीत से धारण कर, औरों को सुनाने का शौक रखते हैं। ज्ञान नहीं है तो फिर बुधि मित्र-सम्बन्धियों में आदि तरफ भटकती रहती है। यहां तो बाप कहते —

हैं और सभी कुछभूल जाना है। पिछाड़ी में कुछ भी याद न रहे। बाबा को सन्यासियों आदि का भी देखा हुआ है। जो पक्के ब्रह्मज्ञानी होते हैं, सवेरे ऐसे बैठे2 अपने ब्रह्म महतत्व को याद करते हैं शरीर छोड़ देते हैं। बाबा उस समय ज्ञान में था। सवेरे प्रभात के समय 4बजे वायुमंडल बड़ा ही शांत हो जाता है था तो समझा जाता था कोई ने शरीर छोड़ा है। उनकी शान्ति का बहुत प्रभाव होताहै। फिर मालूम पड़ जाता था फलाने ने ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ा है। अभी वह ब्रह्म में लीन तो हो न सके। फिर भी माता के गर्भ से जन्मलेना पड़ता है। ज्ञान तो पूरा है नहीं। ब्रह्मा को याद करने से कोई पाप तो कटते ही नहीं। फिर वृद्धि गृहस्थियों पास हो जाकर जन्म लेते हैं। गृहस्थी पास जन्म जरूर लेना ही पड़े। बाप ने समझाया है महात्मा वास्तव में श्रीकृष्ण को कहा जाता है। मनुष्य तो बिगर अर्थ समझे ऐसे ही कह देते। बाप समझाते हैं श्रीकृष्ण है सम्पूर्ण निर्विकारी। परन्तु उनको सन्यासी नहीं, देवता कहा जाता है। सन्यासी कहना वा देवता कहना उनका भी अर्थ है ना। यह देवता देवता कैसे बना। बेहद का सन्यास किया तो फिर चले गये नई दुनिया में। वह तो हद का सन्यास करते हैं। बेहद में जा न सके। हद में ही पुनर्जन्म लेना पड़े विकार से। बेहद का मालिक बन न सके। राजा रानी कब बन न सके। क्योंकि उन्हों का तो धर्म ही अलग है। उनका है सन्यास धर्म। देवी-देवता धर्म नहीं है। सन्यासी धर्म वाले देवी देवता धर्म का ज्ञान दे न सके। फिर गीता आदि क्यों उठाते हैं। यह सभी है अधर्म। इसलिये बाप बाप कहते हैं अधर्म विनाश कर एक आदि सनातन सच्चा2 देवी देवता धर्म की स्थापना करता हूं। बाकी यह सभी अधर्म करते रहते हैं। विकार भी अधर्म है। इसलिये बाप कहते हैं इन सभी का विनाश कर आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापना अर्थ मुझे आना पड़ता है। भारत में जब सतयुग था तो एक ही धर्म था। वही धर्म फिर अधर्म बनता है। अभी तुम फिर से आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। जो जितना पुरुषार्थ करेंगेउतना फल पावेंगे। अपन को आत्मा पक्का निश्चय करना है। भल धंधा आदि करो उसमें भी जितना हो सके उठते-बैठते यह पक्का करो जैसे भक्त लोग सवेरे उठकर एकान्त में बैठ माला जपते हैं। तुम तो सारे दिन का हिसाब निकालते हो, फलानी समय इतने मिनट यादरहो। फिर सभी मिलाकर टोटल निकालते हो। सारे दिन में इतना समय याद रही। वह तो सवेरे ही उठकर माला जपते हैं। भल सभी कोई सच्चे भक्त नहीं होते हैं। कईयों की तो बुध बाहर में कहां2 भटकती रहती है। अभी तुम समझते हो भक्ति से कुछ भी फायदा मिलने का नहीं है। यह तो ज्ञान है। जिससे बहुत फायदा होता है। अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। बाप घड़ी2 कहते रहते हैं मन्मनाभव। यह अक्षर गीता में भी है परन्तु इनका अर्थ सुनाने का अकल सन्यासियों का है नहीं। जबाब देने आवेगा ही नहीं। वास्तव में इनका अर्थ लिखा हुआ है अपन को आत्मा समझ देह के सभी धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। भगवानुवाच है ना। परन्तु उन्हों की बुधि में है कृष्ण भगवान है। तो वह देहधारी पुनर्जन्म में आने वाला है ना। उनको भगवान कैसे कह सकते हैं।

सन्यासियें आद की कोई दृष्टि बाप बच्चों को नहीं हो सकती। भल गांधी को बापू जी कहते हैं परन्तु बाप बच्चे का सम्बन्ध नहीं कहेंगे। वह तो फिर भी साकारी हो गया ना। तुमको तो समझाया जाता है अपन को आत्मा समझो। इसमें जो बाप बैठे हैं वह है बेहद का बापू जी। वह गांधी तो वास्तव में हद काभी बापू जी नहीं था। गांधी से क्या वरसा मिलता था? कुछ भी नहीं। जैसे कि भक्ति मार्ग में वरसा कुछ भी नहीं मिलता। लौकिक बाप से वरसा मिलता है। बापूजी से तो कुछ भी नहीं मिला। अच्छा भारत कीराजधानी हाथ में की। परन्तु वह वरसा तो नहीं कहेंगे ना। सुख मिलना चाहिए ना। वरसे होते ही हैं दो। एक हद के बाप से दूसरा बेहद के बाप से वरसा मिलता है। ब्रह्मा का भी कोई वरसा नहीं मिलता। भल सारी प्रजा का वह पिता है उनको कहते हैं ग्रेट। ग्रेन्ड फादर। वह खुद ही कहते हैं मेरे से तुमको कुछ भी नहीं मिलता है। जब कि यह खुद कहते हैं मेरे से वरसा नहीं मिल सकता तो उस गांधी बापू जी से फिर क्या वरसा मिल सकेगा। कुछ भी —

नहीं। फोरेनर्स तो चले गये। उन्हों की राजधानी में तो फिर भी कुछ सुख था। अभी क्या है। भूख, हड़ताल, म्यापा आदि जो सिखलाकर गये हैं वह अभी सामने आ रहे हैं। और ही तंग कर रहे हैं। फायदा क्या हुआ। और ही जास्ती स्ट्राईक आदि होते, कितने मारा-मारी होते रहते हैं। कोई का डर नहीं। बड़े2 आफीसरों को भी लाठी मार देते हैं। सुख के बदली और ही दुःख।

तो बेहद के बाप और बच्चों की बात यहां ही है। बाप कहते हैं पहले2 तो यह पक्का निश्चय करो हम आत्मा हैं। शरीर नहीं। बाप ने हमको एडाप्ट किया है। हम एडाप्टेड बच्चे हैं। इसने कहा कि हमारे बच्चे बनो। तुमको समझाया जाता है बाप ज्ञान का सागर आया है और सृष्टि का चक्र समझाते हैं। दूसरा कोई समझा न सके। इस चक्र को समझने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। सतोप्रधान जरूर बनना पड़ेगा। ऐसे और कोई समझा न सके। बाप ही कहते हैं मामेकं याद करो। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। यह भी जानते हो पुरानी दुनिया का तो विनाश होना ही है। नई दुनिया में बहुत थोड़े होते हैं। कहां 400 करोड़, कहां कुछ लाख। इतने सभी कहां जावेंगे। अभी तुम्हारी बुधि में है हम सभी आत्मायें ऊपर में थी। फिर यहां आये हैं पार्ट बजाने। आत्माओं को ही एक्टर्स कहेंगे। आत्मा एक्ट करती है। इस शरीर से। आत्मा को आरगन्स तो चाहिए ना। आत्मा कितनी छोटी है। यह भी समझते हो 84 लाख जन्म है नहीं। हरेक अगर 84 लाख जन्म ले फिर रिपीट कैसे करेंगे। यह तो हो नहीं सकता। स्मृति से ही बाहर चला जाये। 84 जन्म भी तुमको ही याद नहीं रहती है। भूल जाते हो। अभी तुम बच्चों को बाप को याद कर पवित्र जरूर बनना है। इस योग-अग्नि से ही विकर्म विनाश होंगे। यह भी निश्चय है बेहद के बाप से बेहद का वरसा हम कल्प कल्प लेते हैं। अभी फिर स्वर्गवासी बनने लिये बाप ने डायरेक्शन दिया है कि मामएकम् याद करो। क्योंकि मैं ही पतित-पावन हूं। तुमने बाप को पुकारा है ना? तो अभी बाप आये हैं पावन बनाने। पावन होते ही हैं देवतायें। पतित मनुष्य होते हैं। पावन आत्मा बनकर फिर शान्तिधाम जाना है। तुम शान्तिधाम चाहते हो या सुखधाम में आने चाहते हो। सन्यासी तो कहते हैं सुख काग बिष्टा समान है। हमको तो शान्ति चाहिए। तो निवृति मार्ग वाले कब सतयुग में आ न सके। सतयुग में था प्रवृति मार्ग का धर्म। निवृति मार्ग का धर्म था नहीं। बाप समझाते हैं प्रवृति मार्ग वाले देवी देवतायें थे जो अभी विकारी असुर बने हैं। देवतायें निर्विकारी थे। वही फिर पुनर्जन्म लेते2 असुर विकारी बनते हैं। अभी बाप कहते हैं निर्विकारी बनना है। स्वर्ग में चलना है तो मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। पुण्यात्मा बन जावेंगे। बाप को याद करते2 तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। जब तुम स्वर्ग में थे तो बाकी सभी शान्तिधाम में थे। वहां शान्ति भी थी तो सुख भी था। अभी है दुःखधाम। फिर बाप आकर सुखधाम की स्थापना करते हैं। दुःखधाम का विनाश। दुःखधाम है सारी दुनिया। सुखधाम है सिर्फ भारत। अभी तुम बेहद के बाप को याद करो तो बेहद की बादशाही मिलेगी। चित्र भी सामने हैं। बोलो अभी तुम कहां खड़े हो। अभी है कलियुग का अन्त। विनाश सामने खड़ा है। बाकी जाकर थोड़ा रहेगा। इतने खण्ड तो वहां होते ही नहीं। यह सभी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी बाप बैठ समझाते हैं। यह पाठशाला है ना। भगवानुवाच : पहले2 परिचय बाप का देना पड़ता है। अभी कलियुग है ना। गोल्डेन एज था। उनको स्वर्ग कहा जाता था। अभी है आयरनएजेड नर्क। फिर स्वर्ग में जाना है। वहां तो सुख ही सुख होता है। एक को याद करना वही है अव्यभिचारी याद। शरीर को भी भूल जाना है। अपने को आत्मा समझना है। शान्तिधाम से आये हैं फिर शान्तिधाम हो जाना है। वहां पतित कोई जा न सके। बाप को याद करते2 तुम पावन बन मुक्तिधाम चले जावेंगे। यह अच्छी रीत बैठ समझाना पड़ता है। आगे इतने सभी चित्र थोड़े ही थे। बिगर चित्र भी नटशेल में समझाया जाता है। इस पाठशाला में मनुष्य से देवता बनाया जाता है। यह है नई दुनिया के लिये नालेज। वह तो बाप ही देंगे ना। तो बाप की दृष्टि रहती है बच्चों पर। हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। तुम भी समझते हो बेहद का बाप हमको समझाते —

हैं। उनका नाम है शिव बाबा। सिर्फ बेहद का बाबा कहने से भी मुंझ जावेंगे। क्योंकि बाबाएं भी बहुत हो गये हैं। म्युनिसपलिटी के मेयर को भी कहते हैं बाबा। बाप कहते हैं मैं इस हूं तो भी मेरा नाम शिव ही है। मैं ही इस रथ द्वारा तुमको नालेज देता हूं। इनको एडाप्ट किया है तो फिर इनका नाम रखा है प्रजापिता ब्रह्मा। भल यह भी पिता हैं परन्तु इन से वरसा नहीं मिलता है। इन द्वारा मैं तुमको देता हूं। इनको भी मेरे से वरसा मिलता है। यह आत्मा मुझ से लेती है। मुझे इस तन का आधार जरूर लेना पड़ता है। वह भी उस= उसका आधार लेता हूं जिसने बहुत जन्म लिये हैं। जो पहले2 गोरा था फिर काम चिक्षा पर बैठ काला हो गया है। सांवरे और गोरे की निशानी भी बहुत अच्छी है। परन्तु यह भी समझते नहीं कि इनका कारण क्या है। किसको भी पता नहीं है। अभी तुम जानते हो गोरा था वही फिर काला बना है। कृष्ण तो गोरा ही था। काला थोड़े ही कहेंगे। काला तो कब करना न चाहिए। बाप ने समझाया है वह भिन्न2 नाम रूप देशकाल काला बना है काम चिक्षा पर चढ़कर। तो जैसे बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। वैसे तुम भी समझ कर समझाते हो। सेन्टर्स बुधि को पाते रहते हैं। कोई अच्छा समझाते हैं, कोई सेकण्ड थर्ड क्लास। जो फर्स्ट क्लास हैं वह समझाते भी फर्स्ट क्लास हैं। थर्ड क्लास वाला थर्ड नमूने .... समझानी तो एक ही है। इनमें ज्ञान और योग की ताकत है। सेकण्डक्लास वाले में ताकत नहीं। थर्ड क्लास वाले तो कब भी याद नहीं करते। योग न होने कारण जौहर भरता नहीं। पंडित तो बहुत ही होते हैं। मिसाल देते हैं ना। पंडित ने कहा राम-नाम सिमरण करने से सागर पार हो जावेंगे ..... तो मनुष्यराम नाम का दान बहुत करते हैं। समझते हैं राम का नाम कहने से सागर पार हो जावेंगे। परन्तु नहीं। वह सभी है भक्ति मार्ग। इस विषय सागर से तुम पार हो जावेंगे। ज्ञान सागर मे अर्थात स्वर्ग में। यह अर्थ कोई समझते नहीं। किसको भी पार जाना ही नहीं है। तो वह सभी हो गई भक्ति। यहां है ज्ञान। ज्ञान तो एक ही बाप देते हैं। ब्रह्माकुमारियां कब भक्ति नहीं करती होंगी। हां बाप ने समझाया है कोई का झगड़ा न हो, तंग न करे इसलिये उनको राज़ी करने लिये थोड़ा बहुत वह भी पार्ट बजाये फिर तुम ज्ञान दे सकते हो। शिव बाबा कहते हैं पतित-पावन मैं ही हूं। और कोई को पतित-पावन नहीं कहा जाता। पावन बनना है तो अपने को आत्मा समझ मुझ पतित-पावन बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। फिर अन्त मते सो गते हो जावेंगी। इसमें कब कोई नाराज़ नहीं होंगे। सभी धर्म वालों के लिये परमपिता परमात्मा शिवब्रह्मा तन से कहते हैं। नहीं तो कैसे बोले। प्रजापिता ब्रह्मा के तन से कहते हैं। देह सहित देह के सभी धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझ मामेकं याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। इस समय कहेंगे 5विकार सर्वव्यापी है। सभी मे है। सतयुग में 5विकार सर्वव्यापी थोड़े ही कहेंगे। आत्मा तो सर्वव्यापी जरूर है। सभी मे/आत्मा है। वहां 5विकार नहीं है। इसलिये सुखी हैं। अभी 5विकार हैं तो दुःखी हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। हड्डी समझा हुआ होना चाहिए। बुधि एक ठिकाने चाहिए। पूरा अटेन्शन नहीं है तो फिर बुधि योग भटकता है। सारी दुनिया में जो भी सतसंग आदि होते हैं बाप बच्चों की दृष्टि कहां भी न होगा। यहां तो बाप कहते हैं अपने को /आत्मा समझ बाप को याद करो। मैं कल्प कल्प एक ही बार आता हूं। क्योंकि आत्मा तमोप्रधान बनी है, उनको फिर सतोप्रधान बनाना है। आत्मा को सत का संग चाहिए। वह एक ही बार मिलता है। एक बार सत का संग मिलने से आत्मा पवित्र बन चली जाती है। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। तुम जानते हो यह लक्ष्मी0 कैसे बने। आगे जन्म में पुरुषोत्तम संगम युग पर ही मनुष्य से देवता बनेहैं वहां यह ज्ञान नहीं होगा। यहां तुमको ज्ञान है हम देवता कैसे बनते हैं। तुम किसको भी समझा सकते हो। संगम पर ही बाप आकर पढ़ाते हैं। नई दुनिया में यह बनने लिये। कितना सहज समझने का है। बच्चों को गुडमार्निंग।

डायरेक्शनः- देहली कृष्णानगर में एकदूसरा सेन्टर खुला है और पहले वाले मकान में चित्र शाला है।

दूसरा सेन्टर की एड्रेसः-

Brahma Kumaris
B 6/22, Krishna Nagar,
DELHI - 31.

चित्रशाला की एड्रेसः-

Brahma Kumaris
B 16/5, Krishna Nagar,
DELHI - 31.